HIN3A 16a

सूरदास : poèmes extraits du सूरसागर

राग धनाश्री

१ जसोदा हरि पालनैं झुलावै ।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ सोइ कछु गावै ।
मेरे लाल कौं आउ निँदरिया, काहैं न आनि सुवावै ।
तू काहें नहिं बेगिहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै ।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै ।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै ।
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै ।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नँद-भामिनि पावै ॥४३॥

राग बिलावल

२ नान्हरिया गोपाल लाल, तू बेगि बड़ौ किन होहि ।
इहिं मुख मधुर बचन हँसिकै धौं, जननी कहै कब मोहिं ।
यह लालसा अधिक मेरे जिय, जो जगदीस कराहिं ।
मो देखत कान्हर इहिं आँगन पग द्वै धरनि धराहिं ।
खेलहिं हलधर-संग रंग रुचि, नैन निरखि सुख पाऊँ ।
छिन-छिन छुधित जानि पय कारन, हँसि-हँसि निकट बुलाऊँ ।
जाको सिव-बिरंचि सनकादिक, मुनिजन ध्यान न पाव ।
सूरदास जसुमति ता सुत-हित, मन अभिलाष बढ़ाव ॥६३॥

राग आसावरी

३ घुटुरुनि चलत स्याम मनि-आंगन, मातु-पिता दोउ देखत री ।
कबहुँक किलकि तात-मुख हेरत, कबहुँ मातु-मुख पेखत री ।
लटकन लटकत ललित भाल पर, काजर-बिंदु भ्रुव-ऊपर री ।
यह सोभा नैननि भरि देख, नहिं उपमा तिहुँ भू पर री ।
कबहुँक दौरि घुटुरुवनि लपकत, गिरत उठत पुनि धावै री ।
इततैं नंद बुलाइ लेत हैं, उततैं जननि बुलावै री ।
दंपति होड़ करत आपस मैं, स्याम खिलौना कीन्हौ री ।
सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन, सुत हित करि दोउ लिन्हौ री ॥८६॥

राग रामकली

४ खीझत जात माखन खात ।
अरुन लोचन, भौंह टेढ़ी, बार-बार जँभात ।
कबहुँ रुनझुन चलत घुटुरुनि, धूरि धूसर गात ।

कबहुँ झुकि कै अलक खैंचत, नैन जल भरि जात।
कबहुँ तोतर बोल बोलत, कबहुँ बोलत तात।
सूर हरि की निरिखि सोभा, निमिष तजत न मात ॥८८॥

राग आसावरी

५ मैं देख्यो जसुदा को नंदन खेलत आंगन बारो री।
ततछन प्रान पलटि गयो मेरो तन मन ह्वै गयो कारो री।
देखत आनि सँच्यो उर अंतर दै पलकनि को तारो री।
मोहिं भ्रम भयो सखी उर अपनैं चहुं दिसि भयो उज्यारो री।
जो गुंजा सम तुलत सुमेरहिं ताहू तें अति भारो री।
जैसें बूंद परत बारिधि में त्यों गुन ज्ञान हमारो री।
हौं उन मांह कि वै मोहिं महियाँ परत न देह सँभारो री।
तरु में बीज कि बीज माहं तरु दुहुं में एक न न्यारो री।
जल थल नभ कानन घर भीतर जहं लौं दृष्टि पसारो री।
तितहीं तित मेरे नैननि आगें निरतत नंद दुलारो री।
तजी लाज कुलकानि लोक की पति गुरुजन प्योसारो री।
जिनकी सकुच देहरी दुर्लभ तिनमें मूंड़ उधारो री।
टोना टामनि जंत्र मंत्र करि ध्यायो देव दुआरो री।
सासु ननद घर घर लिए डोलतिं याको रोग बिचारो री।
कहौं कहा कछु कहत न आवै औ रस लागत खारो री।
इनहिं स्वाद जो लुब्ध सूर सोइ जानत चाखनहारो री ॥११८॥

राग रामकली

६ मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूं है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वहै लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन सी भुइं लोटी।
काचो दूध पियावति पचि पचि देति न माखन रोटी।
सूरदास त्रिभुवन मन मोहन हरि हलधर की चोटी ॥१५२॥

राग रामकली

७ हरि अपनैं आंगन कछु गावत।
तनक-तनक चरननि सों नाचत, मनहीं मनहीं रिझावत।
बाहँ उठाइ काजरी-धौरी गैयनि टेरि बुलावत।
कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत।

माखन तनक आपनैं कर लै, तनक बदन मैं नावत ।
कबहुँक चितै प्रतिबिंब खंभ में, लोनी लिए खवावत ।
दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष अनंद बढ़ावत ।
सूर स्याम के बाल चरित, नित नित ही देखत भावत ॥१५४॥

राग ललित

८ प्रात भयो जागौ गोपाल ।
नवल सुंदरी आईं बोलत तुमहिं सबै ब्रजबाल ।
प्रगट्यौ भानु मंद भयौ उड़पति फूले तरुन तमाल ।
दरसन कौं टाढ़ी ब्रजवनिता, गूँथि कुसुम बनमाल ।
मुखहिं धोइ सुंदर बलिहारी, करहु कलेऊ लाल ।
सूरदास प्रभु आनँद के निधि, अंबुज-नैन बिसाल ॥१८१॥

राग गौरी

९ मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो ।
मोसों कहत मोल को लीन्हों तू जसुमति कब जायो ।
कहा करौं इहि रिस के मारें खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तेरो तात ।
गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात ।
चुटकी दै दै ग्वाल नचावत हँसत सबै मुसुकात ।
तू मोहीं कों मारन सीखी दाउहिं कबहुं न खीझै ।
मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि रीझै ।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत ।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं हौं माता तू पूत ॥१८८॥

राग सारंग

१० जेंवत कान्ह नंद इकठौरे ।
कछुक खात लपटात दोउ कर बालकेलि अति भोरे ।
बरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरे ।
तीछन लगी नैन भरि आए, रोवत बाहर दौरे ।
फूँकति बदन रोहिनी ठाढ़ी, लिए लगाइ अँकोरे ।
सूर स्याम कौं मधुर कौर दै कीन्हें तात निहोरे ॥१९७॥

राग रामकली

११ मैया मैं नहिं माखन खायो ।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायो ।
देखि तुही सींके पर भाजन ऊंचे धरि लटकायो ।
हौं जु कहत नान्हें कर अपनैं मैं कैसें करि पायो ।
मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो ।
डारि सांटि मुसुकाइ जसोदा स्यामहिं कंठ लगायो ।
बाल विनोद मोद मन मोह्यो भक्ति प्रताप दिखायो ।
सूरदास जसुमति को यह सुख सिव बिरंचि नहिं पायो ॥२९९॥

राग नटनारायन

१२ चरावत बृंदाबन हरि धेनु ।
ग्वाल सखा सब संग लगाए खेलत हैं करि चैनु ।
कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ बिषान कोउ बेनु ।
कोउ निरतत कोउ उघटि तार दै जुरी ब्रज बालक सैनु ।
त्रिबिध पवन जहं बहत निसादिन सुभग कुंज घन ऐनु ।
सूर स्याम निज धाम बिसारत आवत यह सुख लेनु ॥४०७॥

राग टोड़ी

१३ बूझत स्याम कौन तू गोरी
कहाँ रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूं ब्रजखोरी ।
काहे कों हम ब्रजतन आवतिं खेलति रहतिं आपनी पौरी ।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद ढोटा करत फिरत माखन दधि चोरी ।
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी ।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी ॥४५५॥

राग रामकली

१४ देखि सखी मोहन मन चोरत ।
नैन कटाच्छ बिलोकनि मधुरी सुभग भृकुटि बिबि मोरत ।
चंदन खौरि ललाट स्याम कें निरखत अति सुखदाई ।
मनौ एक सँग गंग जमुन नभ तिरछी धार बहाई ।
मलयज भाल भ्रकुटि रेखा की कबि उपमा इक पाई ।
मानहु अर्द्धचंद्र तट अहिनी सुधा चुरावन आई ।
भ्रकुटी चारु निरखि ब्रज सुंदरि यह मन करतिं बिचार ।
सूरदास प्रभु सोभा सागर कोउ न पावत पार ॥१२४५॥

राग सोरठ

१५ राधा स्याम की प्यारी ।
कृष्न पति सर्बदा तेरे तू सदा नारी ।
सुनत बानी सखी मुख की जिय भयो अनुराग ।
प्रेम गदगद रोम पुलकित समुझि अपनो भाग ।
प्रीति परगट कियो चाहै बचन बोलि न जाइ ।
नंदनंदन दाम नायक रहे नैननि छाइ ।
हृदय तें कहुं टरत नाहीं कियो निहचल बास ।
सूर प्रभु रस भरी राधा दुरत नहीं प्रकास ॥१२७६॥

राग जैतश्री

१६ मुरली भई रहति लड़बौरी ।
देखति नहीं रैनिहू बासर कैसी लावति ढोरी ।
कर पर धरी अधर के आगें राखति ग्रीब निहोरी ।
पूरत नाद स्वाद सुख पावत तान बजावत गौरी ।
आयसु लिए रहत ताही को डारी सीस ठगौरी ।
सूर स्याम की बुधि चतुराई लीन्ही सबै अँजोरी ॥२४२७॥

राग गौरी

१७ सुनहु सखी याके कुल धर्म ।
तैसोइ पिता मातु तैसी अब देखौ याके कर्म ।
वै बरषत धरनी संपूरन सर सरिता अवगाह ।
चातक सदा निरास रहत है एक बूंद की चाह ।
धरनी जनम देति सबही कों आपुन सदा कुमारी ।
उपजत फिरि ताही में बिनसत छोह न कहुं महतारी ।
ता कुल में यह कन्या उपजी याके गुननि सुनाऊं ।
सूर सुनत सुख होइ तुम्हारैं मैं कहिकै सुख पाऊं ॥२४३१॥

राग सारंग

१८ मधुबन तुम क्यों रहत हरे ।
बिरह वियोग स्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे ।
मोहन बेनु बजावत तुम तर साखा टेकि खरे ।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम मुनि जन ध्यान टरे ।
वह चितबनि तू मन न धरत है फिरि फिरि पुहुप धरै ।
सूरदास प्रभु बिरह दबानल नख सिख लौं न जरे ॥२८८१॥

राग कान्हरो

१९ निरगुन कौन देस कौ बासी ।
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझतिं साँच न हाँसी ।
को है जनक कौन है जननि, कौन नारि को दासी ।
कैसो बरन भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी ।
पावैगो पुनि कियो आपनौ, जो रे कहैगौ गाँसी ।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी ॥३२७९॥

राग जैतश्री

२० अति मलीन बृषभानकुमारी ।
हरि स्रम जल भीज्यो उर अंचलतिहिं लालच न धुवावति सारी ।
अध मुख रहति अनत नहिं चितवति ज्यों गथ हारे थकित जुवारी ।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकर की मारी ।
हरि सँदेस सुनि सहज मृतक भइ इक बिरहिनि दूजे अलि जारी ।
सूरदास कैसे करि जीबैं ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी ॥३६८९॥

राग धनाश्री

२१ राधा माधव भेंट भई ।
राधा माधव माधव राधा कीट भृंग गति हवै जु गई ।
माधव राधा के रँग राँचे राधा माधव रंग रई ।
माधव राधा प्रीति निरंतर रसना करि सो कहि न गई ।
बिहँसि कह्यौ हम तुम नहिं अंतर यह कहिकै उन ब्रज पठई ।
सूरदास प्रभु राधा माधव ब्रज बिहार नित नई नई ॥३८३४॥

राग धनाश्री

२२ अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल ।
काम क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ।
महामोह के नूपुर बाजत, निन्दा सब्द रसाल ।
भ्रम भार्यो मन भयो पखावज, चलत असंगत चाल ।
तृष्ना नाद करति घट भीतर , नाना बिधि दै ताल ।
माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल थल सुध नहिं काल ।
सूरदास की सबै अबिद्या दूरि करौ नंदलाल ॥१४९/३९८७॥